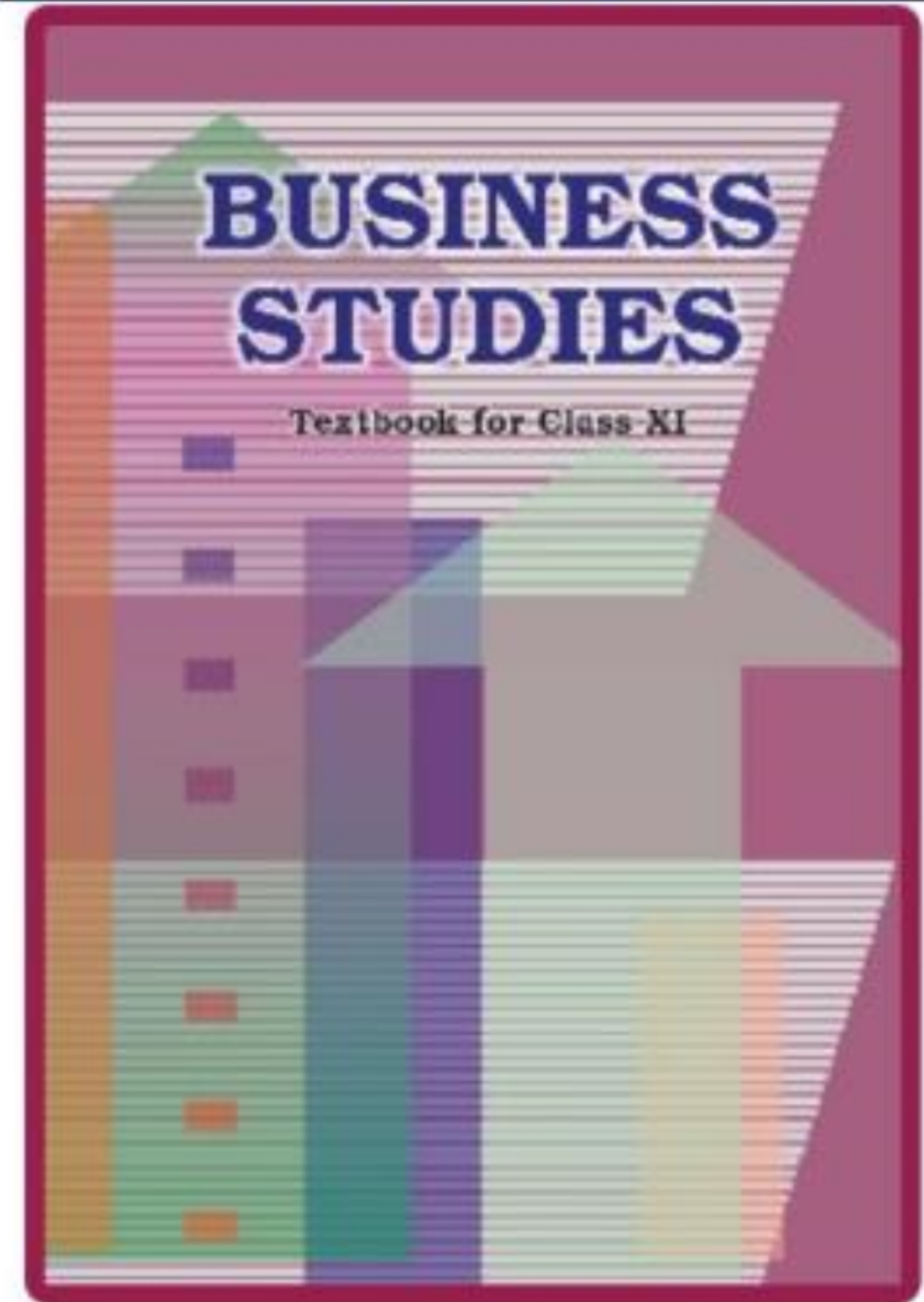


Chapter 8:

Business Finance

Part 6



International Financing:

(i) Commercial Banks:

(ii) International Agencies and Development Banks

(iii) International Capital Markets:

(i) वाणिज्यिक बैंक:

(ii) अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियाँ और विकास बैंक

(iii) अंतर्राष्ट्रीय पूँजी बाज़ार:

(i) Commercial Banks: Commercial banks all over the world extend foreign currency loans for business purposes. They are an important source of financing non-trade international operations. The types of loans and services provided by banks vary from country to country. For example, Standard Chartered emerged as a major source of foreign currency loans to the Indian industry.

दनिया भर के वाणिज्यिक बैंक व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए विदेशी मुद्रा ऋण प्रदान करते हैं। ये गैर-व्यापारिक अंतर्राष्ट्रीय कार्यों के वित्तपोषण का एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं। बैंकों द्वारा प्रदान किए जाने वाले ऋणों और सेवाओं के प्रकार अलग-अलग देशों में भिन्न होते हैं। उदाहरण के लिए, स्टैंडर्ड चार्टर्ड भारतीय उद्योग के लिए विदेशी मुद्रा ऋण का एक प्रमुख स्रोत बनकर उभरा है।

IFC

✓ (ii) International Agencies and Development Banks:

A number of international agencies and development banks have emerged over the years to finance international trade and business. These bodies provide long and medium term loans and grants to promote the development of economically backward areas in the world.

अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियाँ और विकास बैंक: अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और व्यवसाय को वित्तपोषित करने के लिए पिछले कुछ वर्षों में कई अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियाँ और विकास बैंक उभरे हैं। ये संस्थाएँ दुनिया के आर्थिक रूप से पिछड़े क्षेत्रों के विकास को बढ़ावा देने के लिए दीर्घकालिक और मध्यम अवधि के ऋण और अनुदान प्रदान करती हैं।

- These bodies were set up by the Governments of developed countries of the world at national, regional and international levels for funding various projects. The more notable among them include International Finance Corporation (IFC), EXIM Bank and Asian Development Bank.

1956

1982

- इन निकायों की स्थापना दुनिया के विकसित देशों की सरकारों द्वारा राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न परियोजनाओं के वित्तपोषण हेतु की गई थी। इनमें अंतर्राष्ट्रीय वित्त निगम (IFC), एक्जिम बैंक और एशियाई विकास बैंक जैसे उल्लेखनीय संस्थान शामिल हैं।

INR ↑ ↑ USD

(iii) International Capital Markets: Modern organisations

including multinational companies depend upon sizeable borrowings in rupees as well as in foreign currency.

Prominent financial instruments used for this purpose are:

बहुराष्ट्रीय कंपनियों सहित आधुनिक संगठन रुपये और विदेशी मुद्रा दोनों में बड़े पैमाने पर उधार पर निर्भर करते हैं। इस उद्देश्य के लिए उपयोग किए जाने वाले प्रमुख वित्तीय साधन हैं:

(a) Global Depository Receipts (GDR's):

The local currency shares of a company are delivered to the depository bank. The depository bank issues depository receipts against these shares. Such depository receipts denominated in US dollars are known as Global Depository Receipts (GDR).

किसी कंपनी के स्थानीय मुद्रा शेयर डिपॉजिटरी बैंक को सौंपे जाते हैं। डिपॉजिटरी बैंक इन शेयरों के बदले डिपॉजिटरी रसीदें जारी करता है। अमेरिकी डॉलर में मूल्यवर्गित ऐसी डिपॉजिटरी रसीदों को ग्लोबल डिपॉजिटरी रसीदें (जीडीआर) कहा जाता है।

GDR is a negotiable instrument and can be traded freely like any other security. In the Indian context, a GDR is an instrument issued abroad by an Indian company to raise funds in some foreign currency and is listed and traded on a foreign stock exchange.

जीडीआर एक परक्राम्य लिखत है और किसी भी अन्य प्रतिभूति की तरह इसका स्वतंत्र रूप से व्यापार किया जा सकता है। भारतीय संदर्भ में, जीडीआर एक ऐसा लिखत है जिसे कोई भारतीय कंपनी किसी विदेशी मद्रा में धन जुटाने के लिए विदेश में जारी करती है और यह विदेशी स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध और व्यापार किया जाता है।

A holder of GDR can at any time convert it into the
number of shares it represents. The holders of GDRs do
not carry any voting rights but only dividends and capital
appreciation. Many Indian companies such as Infosys,
Reliance, Wipro and ICICI have raised money through
issue of GDRs.

जीडीआर धारक इसे किसी भी समय अपने शेयरों की संख्या में परिवर्तित कर सकता है। जीडीआर धारकों के पास कोई मताधिकार नहीं होता, बल्कि उन्हें केवल लाभांश और पूंजी वृद्धि प्राप्त होती है। इंफोसिस, रिलायंस, विप्रो और आईसीआईसीआई जैसी कई भारतीय कंपनियों ने जीडीआर जारी करके धन जुटाया है।

(b) American Depository Receipts (ADRs):

The depository receipts issued by a company in the USA are known as American Depository Receipts. ADRs are bought and sold in American markets, like regular stocks. It is similar to a GDR except that it can be issued only to American citizens and can be listed and traded on a stock exchange of USA.

अमेरिका में किसी कंपनी द्वारा जारी डिपॉजिटरी रसीदों को अमेरिकन डिपॉजिटरी रसीदें कहा जाता है। एडीआर (ADR) को अमेरिकी बाजारों में सामान्य शेयरों की तरह खरीदा और बेचा जाता है। यह जीडीआर (GDR) के समान है, सिवाय इसके कि इसे केवल अमेरिकी नागरिकों को ही जारी किया जा सकता है और इसे अमेरिका के स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध और कारोबार किया जा सकता है।

(c) Indian Depository Receipt (IDRs):

An Indian Depository Receipt is a financial instrument
denominated in Indian Rupees in the form of a Depository
Receipt. It is created by an Indian Depository to enable a foreign
company to raise funds from the Indian securities market. The
IDR is a specific Indian version of the similar global depository
receipts.

भारतीय निक्षेपागार रसीद एक वित्तीय साधन है जिसका मूल्य भारतीय रुपये में निक्षेपागार रसीद के रूप में अंकित होता है।

इसे एक भारतीय निक्षेपागार द्वारा किसी विदेशी कंपनी को भारतीय प्रतिभूति बाजार से धन जुटाने में सक्षम बनाने के लिए बनाया जाता है। आईडीआर, इसी प्रकार की वैश्विक निक्षेपागार रसीदों का एक विशिष्ट भारतीय संस्करण है।

- The foreign company issuing IDR deposits shares to an Indian Depository (custodian of securities registered with the Securities and Exchange Board of India). In turn, the depository issues receipts to investors in India against these shares.
- आईडीआर जारी करने वाली विदेशी कंपनी एक भारतीय डिपॉजिटरी (भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड के साथ पंजीकृत प्रतिभूतियों का संरक्षक) के पास शेयर जमा करती है। बदले में, डिपॉजिटरी इन शेयरों के बदले भारत में निवेशकों को रसीदें जारी करती है।

- According to SEBI guidelines, IDRs are issued to Indian residents in the same way as domestic shares are issued. The issuer company makes a public offer in India, and residents can bid in exactly the same format and method as they bid for Indian shares. 'Standard Chartered PLC' was the first company that issued Indian Depository Receipt in Indian securities market in June 2010.
- सेबी के दिशानिर्देशों के अनुसार, भारतीय निवासियों को आईडीआर उसी तरह जारी किए जाते हैं जैसे घरेलू शेयर जारी किए जाते हैं।
जारीकर्ता कंपनी भारत में सार्वजनिक पेशकश करती है, और निवासी ठीक उसी प्रारूप और तरीके से बोली लगा सकते हैं जैसे वे भारतीय शेयरों के लिए बोली लगाते हैं। 'स्टैंडर्ड चार्टर्ड पीएलसी' जून 2010 में भारतीय प्रतिभूति बाजार में भारतीय डिपॉजिटरी रसीद जारी करने वाली पहली कंपनी थी।

(d) Foreign Currency Convertible Bonds (FCCBs):/ विदेशी मुद्रा परिवर्तनीय बांड (एफसीसीबी):

- Foreign currency convertible bonds are equity linked debt securities that are to be converted into equity or depository receipts after a specific period. Thus, a holder of FCCB has the option of either converting them into equity shares at a predetermined price or exchange rate, or retaining the bonds.
- विदेशी मुद्रा परिवर्तनीय बांड इक्विटी से जुड़ी ऋण प्रतिभूतियाँ हैं जिन्हें एक निश्चित अवधि के बाद इक्विटी या डिपॉजिटरी रसीदों में परिवर्तित किया जाना होता है। इस प्रकार, एफसीसीबी धारक के पास या तो उन्हें पूर्व निर्धारित मूल्य या विनिमय दर पर इक्विटी शेयरों में परिवर्तित करने या बांड को अपने पास रखने का विकल्प होता है।

The FCCB's are issued in a foreign currency and carry a fixed interest rate which is lower than the rate of any other similar non-convertible debt instrument. FCCB's are listed and traded in foreign stock exchanges. FCCB's are very similar to the convertible debentures issued in India.

एफसीसीबी विदेशी मुद्रा में जारी किए जाते हैं और इनकी एक निश्चित ब्याज दर होती है जो किसी भी अन्य समान गैर-परिवर्तनीय ऋण लिखत की दर से कम होती है। एफसीसीबी विदेशी स्टॉक एक्सचेंजों में सूचीबद्ध और कारोबार किए जाते हैं। एफसीसीबी भारत में जारी किए जाने वाले परिवर्तनीय डिबेंचर के काफी समान हैं।

- Financial needs of a business are of different types — long term, short term, fixed and fluctuating. Therefore, business firms resort to different types of sources for raising funds. Shortterm borrowings offer the benefit of reduced cost due to reduction of idle capital, but long – term borrowings are considered a necessity on many grounds.
- किसी व्यवसाय की वित्तीय ज़रूरतें विभिन्न प्रकार की होती हैं—दीर्घकालिक, अल्पकालिक, स्थिर और अस्थिर। इसलिए, व्यावसायिक कंपनियाँ धन जुटाने के लिए विभिन्न प्रकार के स्रोतों का सहारा लेती हैं। अल्पकालिक उधार, निष्क्रिय पूँजी में कमी के कारण कम लागत का लाभ प्रदान करते हैं, लेकिन दीर्घकालिक उधार कई कारणों से आवश्यक माने जाते हैं।

Factors Affecting the Choice of the Source of Funds

• Cost:

- Financial strength and stability:
- Form of organisation & legal status:
- Purpose and time period:
- Risk profile:
- Control:
- Effect on credit worthiness:
- Flexibility and ease:
- Tax benefits:

• लागत:

- वित्तीय मजबूती और स्थिरता:
- संगठन का स्वरूप और कानूनी स्थिति:
- उद्देश्य और समयावधि:
- जोखिम प्रोफाइल:
- नियंत्रण:
- ऋण पात्रता पर प्रभाव:
- लचीलापन और सहजता:
- कर लाभ:

✓ • **Cost:** There are two types of cost viz., the cost of procurement of funds and cost of utilising the funds.

✓ • **Financial strength and stability of operations:** In the choice of source of funds business should be in a sound financial position so as to be able to repay the principal amount and interest on the borrowed amount.

- **Form of organisation and legal status:** A partnership firm, for example, cannot raise money by issue of equity shares as these can be issued only by a joint stock company.
- **Purpose and time period :** For long term finance, sources such as issue of shares and debentures are more appropriate.

- **Risk profile:** For example, there is a least risk in equity as the share capital has to be repaid only at the time of winding up and dividends need not be paid if no profits are available.
- **Control:** For example, as equity share holders enjoy voting rights, financial institutions may take control of the assets or impose conditions as part of the loan agreement.

- **Effect on credit worthiness:** For example, issue of secured debentures may affect the interest of unsecured creditors of the company and may adversely affect their willingness to extend further loans as credit to the company.
- **Flexibility and ease:** Another aspect affecting the choice of a source of finance is the flexibility and ease of obtaining funds

- **Tax benefits:** Various sources may also be weighed in terms of their tax benefits. For example, while the dividend on preference shares is not tax deductible, interest paid on debentures and loan is tax deductible and may, therefore, be preferred by organisations seeking tax advantage.